# जीवन मूल्यः समायोजन का आधार

डा0 राजश्री*


## सारांश

प्रस्तुत अध्ययन आगरा जनपद की 450 स्तरीकृत यादृच्छिकी विधि द्वारा चयनित विविध क्षेत्रों में कार्यरत महिलाओं पर उनके जीवन मूल्य तथा समायोजन की दशा जानने हेतु किया गया। जीवन मूल्यों में सैद्धांतिक, आर्थिक, सौन्दर्यात्मक, सामाजिक, राजनीतिक व धार्मिक मूल्यों को सम्मिलित किया गया। समायोजन के संदर्भ में गृह, स्वास्थ्य, सामाजिक, व्यावसायिक तथा भावात्मक समायोजन का अध्ययन किया गया। अध्ययन हेतु सामाजिक–आर्थिक स्तर मापनी, जीवन मूल्य मापनी, बेल की समायोजन अनुसूची एवं साक्षात्कार सूची का प्रयोग किया गया। विभिन्न सांख्यकी विधियों का प्रयोग कर विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष में कार्यरत महिलाओं के सामाजिक एवं राजनीतिक मूल्य उच्च स्तर के प्राप्त हुये, जबकि समायोजन औसत स्तर का रहा तथा जीवन मूल्य व समायोजन के विविध क्षेत्रों के मध्य सहसम्बन्ध की गणना द्वारा यह ज्ञात हुआ कि सैद्धांतिक मूल्य एवं समायोजन के समस्त क्षेत्रों के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध है।


## प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति और सभ्यता में भी मानवतावादी परंपरा रही है। भारतीय–दर्शन परंपरा ने सार्वजनीन बंधुत्व और सम्पूर्ण विश्व को एक परिवार के रूप में देखने (वसुधैव कुटुम्बकम) के संप्रत्यय को स्पष्ट किया। स्पष्टतः ये सभी मूल्य ही हैं, जो कि भारत की इस अद्वितीय पहचान को वैश्विक धरातल पर, दीप्तिमान किया है। भारतीय संस्कृति में मूल्यों का स्थान सर्वोपरि है। भारतीय संस्कृति में सत्यम, शिवम, सुन्दरम् को शाश्वत मूल्यों की संज्ञा दी गई है। हमारे समाज व संस्कृति में मनुष्य, मूल्यों के द्वारा ही मानव श्रेणी में आता है अन्यथा वह पशु समान है। मूल्य ही हैं, जो हमें समाज में रहने के योग्य बनाते हैं। इनके अनुसार ही हमें ज्ञात होता है कि मानव के लिये क्या करने योग्य है और क्या नहीं ।

भारतीय समाज धर्म प्रधान समाज रहा है, जहॉ जीवन का हर पक्ष किसी न किसी रूप में धर्म द्वारा परिभाषित, संचालित एवं नियन्त्रित रहा है तथा भारतीय संदर्भ में नारी अपने विभिन्न रूपों में धर्म से परिबद्ध रही है। नारी का मनुष्य जाति की सृष्टि में ही नहीं वरन् समाज निर्माण में भी अपरिहार्य योगदान है। अपनी लघुता में भी महानता, शीतलता में जीवन की उपमा तथा सुन्दर काया में शिवम् बसाये रहने वाली नारी समाज के लिये हमेशा से प्रेरक तत्व रही है। पत्नी एवं माता के रूप में नारी स्वयं अपने लिये आदर्श निश्चित करती है और जिस तरह वह अपने कर्तव्यों का निर्वहन करती हुई जीवन को अर्थ प्रदान करती है, उसी सर्मपण से मानव जाति के भविष्य का निर्माण होता है। प्रकृति ने स्वभाववश ही नारी को स्नेह, करूणा, संवेदना, सहिष्णुता, सामंजस्य आदि गुणों से सॅवारा है। आज नारी घर में ही नहीं बल्कि बाहरी दुनिया में भी अधिपत्य स्थापित कर रही हैं। परिवर्तित जीवन शैली एवं कार्य व्यस्तता के कारण असमायोजन बढ़ता जा रहा है, अधिकांश कामकाजी महिलायें अवसाद ग्रस्त हैं। विवाहित कामकाजी महिलाओं में से लगभग आधी महिलायें नौकरी करने के साथ, घरेलू उत्तरदायित्वों के निर्वहन में कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है, जिसके कारण घर तथा नौकरी दोनों में असमायोजन की स्थिति दृष्टिगोचर होती है। मिश्रा (2009) द्वारा सम्पादित शोध अध्ययन "मैरिटल एडजस्टमेंट एण्ड पेरेण्ट चाइल्ड रिलेशनशिप ऑफ वर्किंग वूमैन" के परिणाम स्वरूप इस तथ्य की पुष्टि हुई कि वह कार्य करके अपने आर्थिक पक्ष को तो सुदृढ़ कर लेती हैं, लेकिन अपने बच्चों के साथ समय व्यतीत नहीं कर पाती हैं। वे अपने किये जाने वाले घरेलू कार्यो से सन्तुष्ट नहीं होती हैं।

भारतीय संस्कृति में प्रत्येक व्यक्ति जीवन मूल्यों के प्रति प्रतिबद्ध है, परन्तु महिलाओं के बदलते कार्यक्षेत्र के कारण उनके मूल्यों में भी परिवर्तन हुआ है। क्या महिलायें शाश्वत जीवन मूल्यों के परिवर्तित स्वरूप को अपनी स्वीकृति प्रदान करती हैं?क्या महिलायें विघटित मूल्यों के साथ समायोजन कर पा रही हैं?क्या वह समायोजन से सन्तुष्ट हैं?

अतः कार्यरत महिलाओं के विविध जीवन क्षेत्रों में समायोजन पर जीवन मूल्यों के प्रभाव का अध्ययन किया गया।

*पोस्ट डोक्टरल फेलो, यू0जी0सी0, शिक्षा संकाय, दयालबाग एजुकेशन इन्स्टीट्यूट, (डीम्ड यूनीवर्सिटी) दयालबाग, आगरा(यू.पी.)

## शोध अध्ययन के उददेश्य

1. कार्यरत महिलाओं के जीवन मूल्यों का अध्ययन करना ।
2. कार्यरत महिलाओं समायोजन के विविध पक्षों का अध्ययन करना ।
3. कार्यरत महिलाओं के विविध जीवन मूल्य एवं समायोजन के विविध क्षेत्रों के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।

## शोध अध्ययन की परिकल्पना

कार्यरत महिलाओं के जीवन मूल्य उनके समायोजन को सार्थक रूप से प्रभावित करते हैं।

## शोध अध्ययन की परिसीमाकंन

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन केवल आगरा क्षेत्र की शिक्षित कार्यरत महिलाओं पर किया गया।
2. केवल उन कार्यरत महिलाओं पर अध्ययन किया जायेगा, जो कम से कम 6 घंटे प्रतिदिन नियमित कार्य करती हों।
3. एक निश्चित आयु वर्ग (25–35 वर्ष) की महिलाओं को ही अध्ययन में सम्मिलित किया गया।

## अध्ययन के चर

प्रस्तुत अध्ययन में जीवन मूल्य स्वतंत्र चर एवं समायोजन परतंत्र चर के रूप में सम्मिलित किया गया।

## अध्ययन विधि

वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि एवं साक्षात्कार प्रविधि।

## न्यादर्श

स्तरीकृत यादृच्छिकी विधि द्वारा आगरा जनपद की कुल कार्यरत महिलाओं में से उच्च एवं निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर तथा शैक्षिक स्तर में विभक्त कर 450 कार्यरत शिक्षित महिलाओं को अन्तिम न्यादर्श के रूप में चयन किया गया।

## अध्ययन उपकरण

सामाजिक–आर्थिक स्तर मापनी, जीवन मूल्य मापनी, बेल की समायोजन अनुसूची एवं साक्षात्कार हेतु उददेश्य आधारित असंरचित साक्षात्कार सूची का प्रयोग किया गया।

## सांख्यिकी प्रविधियॉ

वर्णनात्मक सांख्यिकी, अनुमानात्मक सांख्यिकी।

## प्रदत्तों का विश्लेषण एवं निष्कर्ष

उद्देश्य 1: कार्यरत महिलाओं के जीवन मूल्यों का अध्ययन

**तालिका संख्या 1.1 कार्यरत महिलाओं के विविध जीवन मूल्यों के प्राप्तांकों के विवरणात्मक सांख्यिकीय मान (N=450)**

| जीवन मूल्य | मध्यमान | मानक विचलन | जैड मान | मूल्य स्तर |
|---|---|---|---|---|
| सैद्धान्तिक मूल्य | 40.84 | 5.59 | +0.12 | औसत |
| आर्थिक मूल्य | 40.90 | 6.24 | 10.04 | औसत |
| सौन्दर्यात्मक मूल्य | 34.90 | 7.02 | -0.97 | निम्न |
| सामाजिक मूल्य | 41.30 | 5.55 | +0.09 | उच्च |
| राजनीतिक मूल्य | 39.00 | 5.60 | +0.08 | उच्च |
| धार्मिक मूल्य | 38.00 | 7.38 | -0.48 | औसत |
| कुल योग | 235.18 | 13.59 | | |

तालिका संख्या 1.1 के अवलोकन से यह ज्ञात हुआ कि समस्त जीवन मूल्यों के साख्यंकीय मानों में से सामाजिक मूल्यों का मध्यमान सर्वाधिक 41.30 तथा राजनीतिक मूल्यों का मध्यमान 39.00 पाये गये, जो यह प्रकट करता है कि कार्यरत महिलाओं के सामाजिक एवं राजनीतिक मूल्य उच्च स्तर के है, अर्थात कार्यरत महिलायें सामाजिक सम्बन्धों को बनाये रखने के लिये सदैव तत्पर रहती हैं। जो कार्यरत महिलाओं का अपने अधिकारों के प्रति सजगता तथा उनको प्राप्त करने के लिये आवश्यक कार्यशैली को प्रदर्शित करता है। आर्थिक मूल्य 40.90 व सैद्धान्तिक मूल्य 40.84 व धार्मिक मूल्य 38.00 औसत स्तर के तथा सौन्दर्यात्मक मूल्यों का मध्यमान 34.90, निम्न स्तर का पाया गया।

**तालिका संख्या 1.2 उच्च व निम्न सामाजिक आर्थिक एवं शैक्षिक स्तर के संदर्भ में कार्यरत महिलाओं के जीवन मूल्यों के प्राप्तांको, मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा क्रा0 अनु0 मान**

| | सामाजिक आर्थिक स्तर | | शैक्षिक स्तर | |
|---|---|---|---|---|
| | उच्च | निम्न | उच्च | निम्न |
| मध्यमान | 235.24 | 235.12 | 235.89 | 234.48 |
| प्रमाणिक विचलन | 12.60 | 14.46 | 11.23 | 16.61 |
| क्रांतिक अनुपात मान | 0.438 | | 0.437 | |

सार्थकता स्तर 0.05

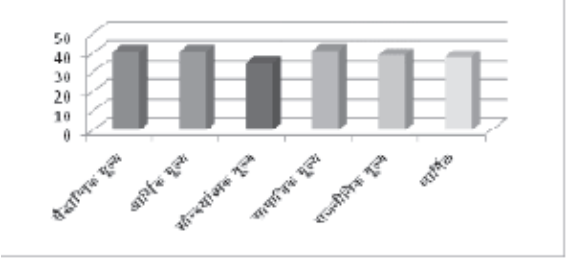


**चित्र सं. 1.1 कार्यरत विविध जीवन मूल्यों के मध्यमानों का दण्डचित्र**

तालिका स्पष्ट होता है कि उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर की कार्यरत महिलाओं के जीवन मूल्यों के मध्यमान 235.24, प्रमाणिक विचलन 12. 69 तथा निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर की कार्यरत महिलाओं के जीवन मूल्यों के मध्यमान 235.14 एवं प्रमाणिक विचलन 14.48 पाया गया। जो लगभग समान है, उक्त दोनों समूहों में क्रांतिक अनुपात परीक्षण के मानों द्वारा ज्ञात होता है कि कार्यरत महिलाओं के जीवन मूल्यों का क्रांतिक अनु0 मान (0.438) 0.05 सार्थकता स्तर पर तालिका मानों से कम है, जिससे स्पष्ट होता है कि कार्यरत महिलाओं के जीवन मूल्यों पर सामाजिक आर्थिक स्तर का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

उद्देश्य 2: कार्यरत महिलाओं के समायोजन के विविध क्षेत्रों का अध्ययन

**तालिका संख्या 2.1 कार्यरत महिलाओं के समायोजन के विविध क्षेत्रों के प्राप्तांक विवरणात्मक सांख्यिकीय मान (N=450)**

| समायोजन के विविध आयाम | मध्यमान | मानक विचलन | स्तर |
|---|---|---|---|
| गृह समायोजन | 9.77 | 4.94 | औसत |
| स्वास्थ्य समायोजन | 7.32 | 4.33 | औसत |
| सामाजिक समायोजन | 13.10 | 4.11 | औसत |
| व्यावसायिक समायोजन | 9.02 | [illegible] | औसत |
| भावात्मक समायोजन | 11.22 | 5.27 | औसत |
| **कुल योग** | **50.43** | **16.61** | औसत |

तालिका से स्पष्ट है कि कार्यरत महिलाओं का सामाजिक समायोजन का मध्यमान 13.10 समायोजन के अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा उत्तम है, जिसका मुख्य कारण यह है कि भारतीय सामाजिक कार्यो के प्रति सदैव जागरूक होते हैं, भावात्मक समायोजन का मध्यमान 11.22 यह प्रकट करता है कि कार्यरत महिलायें भावात्मक रूप से सुदृढ़ होती हैं। गृह समायोजन 9.77, व्यावसायिक समायोजन 9.02 तथा स्वास्थ्य समायोजन 7.32 औसत स्तर का होना यह प्रकट करता हैं, कि कार्यरत महिलायें कार्य तथा परिवार के मध्य समायोजन के लिये सदैव प्रयासरत रहती हैं, लेकिन समस्याओं के कारण पूर्ण रूप से समायोजित नहीं हो पाती हैं। व्यवसाय/कार्य की समस्याओं का प्रभाव गृह समायोजन तथा घरेलु समस्याओं का प्रभाव व्यावसायिक समायोजन पर स्पष्टः परिलक्षित होता है। अधिक कार्य तथा उससे होने वाला तनाव उन्हें स्वास्थ्य समस्यायें प्रदान करता है, लेकिन आर्थिक समस्याओं को देखते हुये वह स्वास्थ्य की अनदेखी कर कार्य समायोजन को प्रमुखता देती हैं, जिससे स्वास्थ्य समायोजन का स्थान अंतिम हो जाता है। समायोजन सूची के साख्यंकीय गणना के अनुसार कार्यरत महिलाओं के सभी समायोजन औसत स्तर के हैं।

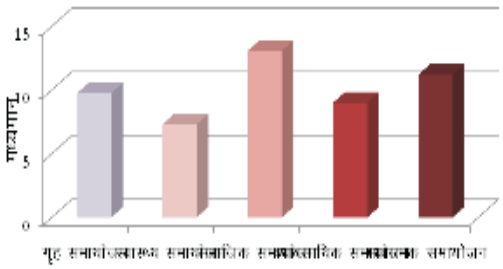


**चित्र सं. 1.2 कार्यरत महिलाओं के समायोजन के विविध क्षेत्रों के मध्यमानों का दण्डचित्र**

कार्यरत महिलाओं के समायोजन के विविध क्षेत्रों को विश्लेषण करने के लिए प्राप्त सांख्यिकीय परिणामों पर आधारित मध्यमानों का दण्डचित्र से यह स्पष्ट होता है कि कार्यरत महिलाओं का सामाजिक समायोजन सबसे अच्छा है, दूसरे स्थान पर भावात्मक समायोजन, तीसरे स्थान पर गृह समायोजन, चौथे स्थान पर व्यावसायिक समायोजन और पांचवे स्थान पर स्वास्थ्य समायोजन है।

**तालिका संख्या 2.2 उच्च व निम्न सामाजिक आर्थिक एवं शैक्षिक स्तर के संदर्भ में कार्यरत महिलाओं के समायोजन के प्राप्तांको, मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा क्रा0अनु0 मान**

| | सामाजिक आर्थिक स्तर | | शैक्षिक स्तर | |
|---|---|---|---|---|
| | उच्च | निम्न | उच्च | निम्न |
| मध्यमान | 47.70 | 53.15 | 48.12 | 52.73 |
| प्रमाणिक विचलन | 16.89 | 15.89 | 55.35 | 17.51 |
| क्रांतिक अनुपात मान | 0.00047 | | 0.00312 | |

*सार्थकता स्तर .05

तालिका के अवलोकन से है कि उच्च तथा निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर की कार्यरत महिलाओं के समयोजन के मध्यमान व प्रमाणिक विचलन लगभग समान है, उक्त दोनों समूहों में टी परीक्षण के क्रांतिक अनुपात मान 0.00047 पाया गया, जो कि 0.05 सार्थकता स्तर पर तालिका मानों से कम है। स्पष्ट है कि कार्यरत महिलाओं के समायोजन पर सामाजिक–आर्थिक स्तर का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

**उददे्श्य 3 : कार्यरत महिलाओं के विविध जीवन मूल्य एवं समायोजन के विविध क्षेत्रों के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन**

**तालिका संख्या 3.1 जीवन मूल्य एवं समायोजन के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक के प्राप्त मान**

| जीवन मूल्य | गृह समायोजन | स्वास्थ्य समायोजन | सामाजिक समायोजन | व्यावसायिक समायोजन | भावात्मक समायोजन |
|---|---|---|---|---|---|
| सैद्धान्तिक मूल्य | 0.12* | 0.06 | 0.09* | 0.04 | 0.01 |
| आर्थिक मूल्य | 0.04 | 0.06 | 0.09* | 0.03 | 0.05 |
| सौन्दर्यात्मक मूल्य | 0.07 | 0.02 | 0.04 | 0.00 | 0.05 |
| सामाजिक मूल्य | 0.05 | 0.08* | -0.02 | 0.12* | 0.05 |
| राजनीतिक मूल्य | 0.05 | -0.03 | 0.05 | 0.01 | 0.00 |
| धार्मिक मूल्य | 0.05 | -0.04 | 0.00 | 0.03 | 0.04 |

*सार्थकता स्तर 0.05

कार्यरत महिलाओं के विविध जीवन मूल्य व समायोजन के विविध क्षेत्रों के मध्य सहसम्बन्ध की गणना द्वारा प्राप्त मानों से यह ज्ञात होता है कि सैद्धांतिक मूल्य एवं समायोजन के समस्त पॉच क्षेत्रों (गृह, स्वास्थ्य, सामाजिक, व्यवसायिक तथा भावात्मक) के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध है।

सैद्धान्तिक मूल्यों का गृह तथा सामाजिक समायोजन पर सार्थक रूप से एवं स्वास्थ्य, व्यावसायिक तथा भावात्मक समायोजन को आंशिक रूप से प्रभावित करते हैं। आर्थिक मूल्यों का सामाजिक, गृह, स्वास्थ्य, व्यावसायिक एवं भावात्मक समायोजन पर सार्थक प्रभाव होता है। सौन्दर्यात्मक मूल्यों का स्वास्थ्य एवं भावात्मक समायोजन पर आंशिक सकारात्मक प्रभाव पड़ता है, जबकि सौन्दर्यात्मक मूल्य कार्यरत महिलाओं के गृह, सामाजिक, तथा व्यावसायिक समायोजन को न्यूनतम ऋणात्मक रूप से प्रभावित करते हैं। सामाजिक मूल्य गृह व भावात्मक समायोजन को आंशिक सकारात्मक तथा स्वास्थ्य एवं व्यावसायिक समायोजन को उच्च सकारात्मक रूप तथा सामाजिक समायोजन को आंशिक नकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं। राजनैतिक मूल्य गृह, सामाजिक, व्यावसायिक व भावात्मक समायोजन को आंशिक धनात्मक तथा स्वास्थ्य समायोजन को आंशिक नकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं। धार्मिक मूल्य गृह, सामाजिक, व्यावसायिक व भावात्मक समायोजन को आंशिक सकारात्मक तथा स्वास्थ्य समायोजन को आंशिक नकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं।

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची


बैल, एच0 एम0 (1961) ''द एडजस्टमेंट इन्वेटरी एडल्ट फार्म'' साइक्लोजिस्ट प्रेस, इंक, कैलीफोर्निया।

बुच एमबी (1983–88) ''फोर्थ सर्वे आफ रिसर्च इन एजुकेशन'', एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली।

बुच एमबी (1988–92) ''फिफ्थ सर्वे आफ रिसर्च इन एजुकेश'', एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली।

डागर, वी.सी.एस. (1992) ''शिक्षा तथा मानव मूल्य'' हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ।

दत्ता, आर0 के0 (2003) ''वूमैन इम्पावरमेण्ट'', रिफरेंस प्रेस पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

डुने, पी0 शुल्टज (2006) ''साइकोलोजी एण्ड वर्क्स टूडे'', पीयरसन एजुकेशन पब्लिकेशन, न्यूयार्क।

फाक्स, डी0 जे0 (1969) ''द रिसर्च प्रोसेस इन एजुकेशन'' हॉल्ट रेनहार्ट एण्ड विन्स्टन इंक, लंदन।

गुड, बार एवं स्केटस (1982) ''मैथडोलोजी ऑफ एजुकेशन रि–एप्लीकेशन'' सेन्च्युरी पब्लिकेशन, न्यूयार्क।

गुप्त, नत्थू लाल (1987) ''मूल्य परक शिक्षा'' कृष्णा ब्रादर्स, अजमेर।

एच0 ए0, गैरेट (1962) ''स्टेटिक्स इन साइक्लोजी एण्ड एजुकेशन'' एलाइट पैसेफिक प्राईवेट लि0, मुम्बई।

जॉन, सी (1939) ''चेंजिग वैल्यूज'', पैन पब्लिशर्स, जर्मनी।

जैश्री (2008) ''मूल्य, पर्यावरण और मानवाधिकार की शिक्षा'', शिप्रा पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

ओझा एवं भार्गव (2005) ''स्टडी ऑफ वैल्यूज टेस्ट'' नेशनल साइक्लोजिकल कारपोरेशन, आगरा।